दलाल समुदाय मुण्डा बहुल इलाके से दुम दबा कर भागने लगा था।

7 जनवरी 1900 को बिरसा ने खूंटी थाने पर हमला किया। उस हमले में एक सिपाही मारा गया। अब तक मुण्डाओं के सीने में हौल बनकर घुसा हुआ पुलिसिया आतंक हवा हो गया था। किन्तु यह नितान्त दो भिन्न प्रकार के समाजों के बीच ही संघर्ष नहीं था, यह दो प्रौद्योगिकियों के बीच भी संघर्ष था। बन्दूकों के समक्ष मुण्डाओं के गुलती बलोया न टिक सके और 10 जनवरी के दिन सैलराकार की निर्णायक मुठभेड़ में हजारों मुण्डा शहीद हो गए। इस निर्णायक संघर्ष के बाद भी बिरसा संघर्ष की आग सीने में दबाए बच निकला था। बिरसा की गिरफ्तारी के लिए 500 रुपए का इनाम रखा गया। यही नहीं, मुण्डा लोग उस पुरस्कार के लिए मुहताज हों इसके लिए उन्हें भूखों मारने के प्रबन्ध भी किए गए। इसी प्रबन्ध का प्रतिफल था कि बिरसा मुण्डा फरवरी 1900 में गिरफ्तार हुआ और जेल में ही 9 जून 1900 को रहस्यमयी परिस्थितियों में मर गया।

बिरसा मुण्डा ने मुण्डाओं को संगठित करने में तमाम अवैज्ञानिक आधारों- ईश्वरीयता, धर्म आदि का आश्रय लिया था। यही नहीं संघर्ष के दौरान वस्तुगत तथ्य—सैनिक क्षमता की उपेक्षा कर छापामार संघर्ष के बजाय सीधे संघर्ष में शामिल हुआ। बिरसा की इन गलतियों से समूचे आन्दोलन को नुकसान उठाना पड़ा किन्तु क्या बिरसा इन गलतियों से बच सकते थे ?

टोना एक काल्पनिक प्रौद्योगिकी है (डी.पी. चट्टोपाध्याय)। अतः उस दौर में जब सूचना और संचार के साधन एक दम नहीं थे तथा समाज की उत्पादन प्रणाली आदिम थी - सांस्कृतिक पिछड़ेपन के कारण आन्दोलन के गठन और प्रसार के लिए ईश्वरीयता से बचा नहीं जा सकता था। पर समग्रता में बिरसा ने अपनी समूची प्रतिभा मुंडा समाज के उत्थान के लिए ही लगाई थी।

• मुक्तिबोध मंच, पन्तनगर

धर्म का धंधा-ईसा मसीह का नया चेहरा

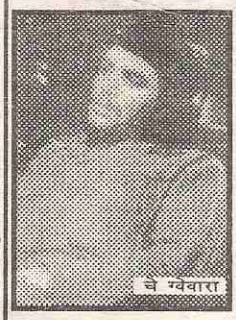

यूं तो ईश्वर और धर्म की सत्ता के अस्तित्व को लेकर तमाम सवाल उठते रहे हैं, विवाद खड़े होते रहे हैं और बहसें होती रहीं हैं। हम उन विवादों के इतिहास में जाना भी नहीं चाहते। इस बहस का अवसान तो पिछली शताब्दी की शुरुआत में ही हो गया था। वैसे सामाजिक और वैज्ञानिक प्रगति के फलस्वरूप धर्मकेन्द्रित समाज के स्थान पर मानवकेन्द्रित समाज की स्थापना के साथ ही इन बहसों-विवादों का भविष्य निर्धारित हो गया था। लेकिन, इधर, धर्म के प्रतीकों का संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण कर उनका नवीनीकरण करने की जरूरत महसूस होने लगी है। इसका एक उदाहरण पिछले वर्ष इसाई कलीसों के एक समूह द्वारा ईसा मसीह का चेहरा बदलने की चाहत व्यक्त करना है।

2000 वर्षों के बाद 'चर्चेज इन एडवरटाइजिंग नेटवर्क' (CAN) के विज्ञापनकर्ताओं ने यह प्रस्तावित किया है कि ईसा मसीह का दयनीय, करूण और बासी चेहरा बदल कर उन्हें एक उग्रपरिवर्तनवादी की छवि दी जाए; जिसके चेहरे पर ओज तथा आंखों में चमक हो। इसीलिए ईसा मसीह का प्रस्तावित नया चेहरा लैटिन अमेरिका के प्रसिद्ध कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी चे-ग्वेरा से मेल खाता हुआ है, न कि किसी आस्थावान इसाई का। चेहरा बदलने के पीछे फादर टॉम एम्ब्रोस की तर्क है कि ईसा मसीह के चेहरे से एक समर्पण का भाव झलकता है इसके विपरीत उन्हें एक क्रान्तिकारी की तरह दिखना चाहिए। यह सर्वविदित है कि चे-ग्ववोरा अपने जीवन में धर्म के कायल नहीं रहे। उन्होंने एक ही धर्मयुद्ध लड़ा-शोषित, उत्पीड़ित मानवता के लिए। लैटिन अमेरिका की आम जनता की मुक्ति ही उनका धर्म था।

अर्जेण्टीना में जन्मे चे-ग्वेवारा, एक डाक्टर थे। वे पूरे लैटिन अमेरिका को अपनी मातृभूमि मानते थे और किसी भी देश में क्रान्ति की मदद करने को हमेशा तत्पर रहते थे। वे क्यूबा के तानाशाह बतिस्ताकी सरकार के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष में फिडेल कास्त्रों के नेतृत्व वाले छापामार दस्ते के सदस्य थे। 1 जनवरी 1959 को क्यूबा की क्रान्ति की विजय के बाद उन्हें क्यूबा के राष्ट्रीय बैंक का डायरेक्टर, फिर उद्योग मंत्री बनाया गया। लेकिन इस विद्रोही आत्मा को सरकार चलाना रास नहीं आया और वे क्यूबा छोड़कर बोलीविया की क्रांति में भाग लेने के लिए चल पड़े। 1967 में छापामार दस्ते का नेतृत्व करते हुए चे-ग्वेवारा बोलीविया के जंगलों में अमेरिकी साम्राज्यवादपरस्त प्रतिक्रियावादी शासकों के हाथों शहीद हो गये।

यदि, आज 'चर्चेज इन एडवारटाइजिंग नेटवर्क' अपने कामों के प्रसार के लिए चेहरे की कांतिमय आभा और भविष्य की ओर उठी निगाहों वाली चे-ग्वेवारा की छवि को ईसा मसीह के रूप में स्थापित करना चाहता है तो इसका उद्देश्य विशुद्ध रूप से व्यापारिक ही है। दरअसल ईसा मसीह की यह छवि 'ईस्टर सर्विस' मे ज्यादा लोगों को आकृष्ट कराने के लिए एक समूह 'क्रिश्चियन इन मीडिया' द्वारा प्रस्तुत की गयी हैं। ऐसा करने से तमाम लोग सहमत नहीं हैं। लेकिन इससे धर्म का व्यापारिक स्वरूप खुलकर सामने आ गया है। इस प्रकरण में, हम किसी धर्म की प्रतिमा को अपने समय में संशोधित एवं परिवर्द्धित होते देख रहे हैं। ईसा मसीह के चेहरे में दीनता का भाव देखकर उसे बदलने वाले, धर्म के व्यापारी कहीं स्वयं ही दीन-हीन असहाय-निरुपाय तो नहीं हैं ? इससे धर्म के व्यापारियों की खुद की आस्था ही जाहिर होती है— व्यापार में आस्था! ईसा मसीह की जगह चे-ग्वेवारा का चेहरा लगाने से, कहीं चेहरों का अदल-बदल करने वालों की दुनिया के अन्त की तैयारी न शुरू हो जाए? क्योंकि चेहरा एक प्रतीक होता है, उसके साथ विचार और दर्शन भी प्रचारित होते हैं और विचार कहीं भौतिक शक्ति बन गये तो क्या होगा? इसका जवाब चे-ग्वेवारा की भविष्य की ओर उठी निगाहों में ढूढ़ां जा सकता है।

• भूपेश कुमार